

{ وَنُنزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ } [الاسراء: ٨٢]
(यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है)

الرقية الشرعية अरूक़िया अशशरईआ

(जिन्न, जादू और नज़रे बद् का इलाज कुरआनो सुन्नत की रोशनी में)



राक़ी मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

मकान नं. 1337/1338, पोस्ट ऑफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर
Mob. 9785254147, 9928160191, 9982445841

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرقية الشرعية अरुक्किया अशरईआ

नाशिर

राक्री मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

मकान नं. 1337/1338, नियर विजिटेबल मार्केट
पोस्ट आफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल नं. 9785254147, 9928160191, 9982445841



राक्री मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

- नाम किताब : अरूक़्रिया अशशरईआ
- नाम मुअल्लिफ़ : राक्री मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी
- दूसरी इशाअत : नवम्बर 2016
- सफ़हात : 64
- तादाद : 1000
- तबाअत : अल क़लम कम्प्यूटर्स, रामगंज, जयपुर
- नाशिर : अरूक़्रिया अशशरिआ सेन्टर, जयपुर

₹ 50/-

ब-एहतमाम:

अरूक़्रिया अशशरईआ सेन्टर

मकान नं. 1337/1338, नियर विजिटेबल मार्केट
पोस्ट आफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल नं. 9785254147, 9928160191, 9982445841

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

तक़दीम

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने तमाम मख़लूक़ात को पैदा किया और हर ज़मानो मकान में अपनी तक़दीर का निफ़ाज़ किया, उसके इन्आमात पर हम उसकी हम्दो शुक्र करते हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का फ़ज़लो एहसान है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल है।

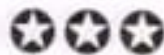
अल्लाह उन पर, उनके आल व अस्हाब और उनकी सच्ची इत्तेबा करने वालों पर रहमत नाज़िल फरमाये।

आमीन या रब्बल आलमीन



इस्लामी भाई व बहन

- ★ क्या आप अपनी ज़िन्दगी में रंजो गम, बेचैनी व तंगी और कसरते मुश्किलात से दोचार है?
- ★ क्या आप किसी जिस्मानी या नफ़सियाती मरज़ से दोचार हैं जिसका आप को इलाज नहीं मिल रहा है?
- ★ क्या आप को अल्लाह की इताअत में सुस्ती और इत्तिबाए ख़्वाहिशात व गुनाह से लगाव महसूस होता है?
- ★ क्या आप अपनी ज़िन्दगी में कुछ अजीबो ग़रीब हरकात महसूस करते हैं जिसका का सबब आपको नहीं मालूम है?
- ★ क्या आप इमान व अख़लाक़ के आला मरतबा पर पहुंचने के ख़्वाहिशमन्द हैं? इस किस्म के बहुत सारे सवालों के जवाबात इन्शा अल्लाह आप को इस किताब में मिलेंगे।



बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

मुक़द्दमा

الحمد لله، والصلاة والسلام على رسول الله.
أما بعد.

दौरे हाज़िर में नफ़सियाती, रूहानी और जिस्मानी बीमारी में बड़ा इज़ाफ़ा हुआ है, बहुत सी ऐसी नई बीमारियों का इन्किशाफ़ हुआ जो पहले ना थी, इन बीमारियों के इलाज के लिए लोगों ने बड़ी कोशिशें कीं, इस में अपना माल और वक़्त बर्बाद क्या। मगर इसके बावजूद दवाख़ाने और डिस्पेंसरियाँ बढ़ती गई और बीमारियों में इज़ाफ़ा ही होता रहा। नहीं है कोई ताक़त और कुव्वत सिवाये अल्लाह के।

यह सब कुछ या उनमें कुछ लोगों की इन बीमारियों से हिफ़ाज़त के तरीकों से गुफ़लत का नतीजा है, दूसरी जानिब इन बीमारियों से दोचार होने के बाद इनके इलाज के सहीह तरीकों से जिहालत और ख़ास तौर पर शरइ झाड़-फूंक की कैफ़ियात से ला इल्मी है।

इसीलिए मैंने यह मुख़्तसर रिसाला तहरीर करने के लिए सोचा ताकि लोगों को बचने के तरीकों की याद दहानी हो और फिर सहीह इलाज कर सकें।



दुआ मोमिन का हथियार है

हर इन्सान अपनी जिन्दी में कभी ना कभी ऐसे हालात से यक्रीनन दोचार होता है, जब उसके सारे दुनियावी सहारे टूट जाते हैं, उम्मीदें खत्म हो जाती हैं, जाहिरी अस्बाब और वसाइल नाकाम हो जाते हैं। करीब तरीन अइज्जा व अक्रारिब पर एतमाद नहीं रहता हत्ता के भाई भाई के साथ बात नहीं कर सकता, बीवी शौहर के साथ और औलाद अपने वालिदैन के साथ खुलकर बात नहीं कर सकते। गोया सब कुछ होते हुए भी इन्सान तन्हाई, बेवसी और बेकसी का आलम महसूस करता है। तब इन्सान के अन्दर से एक आवाज़ उठती है कि एक सहारा अब भी मौजूद है, एक दरवाज़ा अब भी खुला है जहाँ इन्सान अपने दुख-सुख और मसाइबो आलाम की दास्तान हर वक़्त बयान कर सकता है। इस कैफ़ियत का जिक्र खुद अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में इन अलफ़ाज़ में किया है-

أَمِّنُ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ

خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ط إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ

तर्जुमा : “भला कौन है जो बेकरार की दुआ कुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है और उसकी तकलीफ़ दूर करता है और ज़मीन में तुम्हें खिलाफ़त अता करता है। (यह काम करने वाला) अल्लाह के सिवा कोई और भी है?” (सूरह नमल, आयत : 62)

एक शख्स रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया : “या रसूलल्लाह! आप हमें किस चीज़ की तरफ़ दावत देते हैं? आप ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह की तरफ़ जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं, जब तुम किसी मुश्किल में होते हो तो तुम्हारी मुश्किल कुशाई करता है, जंगलों में राह भूलकर उसे पुकारते हो तो तुम्हारी राहनुमाई

करता है, जब तुम्हारी कोई चीज खो जाए और उससे माँगो तो तुम्हें वापस लौटा देता है, जब कहतसाली में उससे दुआएँ माँगो तो मूसलाधार बारिश बरसाता है।” (मुसनद अहमद)

कुरआन मजीद ने हमारे सामने अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की बहुत सी मिसालें रखी हैं कि उन्होंने मुसीबत परेशानी और आजमाइश के वक़्त अल्लाह को पुकारा और अल्लाह ने उनकी मुसीबत और तकलीफ़ दूर फ़रमाई।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को अज़ाब की ख़बर देकर चले गए, खुद एक भरी हुई कश्ती में सवार हुए। बोझ की ज़्यादाती की वजह से कुरआ डाला गया तो हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम निकला, चनांचे उन्हें समन्दर में छलांग लगानी पड़ी। जहाँ एक मछली ने अल्लाह के हुक़म से उन्हें निगल लिया, तब हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को पुकारना शुरू किया-

فَتَادَى فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ
الظَّالِمِينَ ○ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ

तर्जुमा : “तब यूनुस अलैहिस्सलाम ने हमें तारीकियों में पुकारा, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तेरी ज़ात पाक है मैं बेशक क़सूरवार हूँ, जब हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे ग़म से नजात बख़्शी। मोमिनों को हम इसी तरह नजात देते हैं।” (सूरह अम्बिया, आयत : 87-88)

सूरह साफ़फ़ात में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं- “अगर यूनुस अलैहिस्सलाम हमें याद न करता तो क़यामत तक मछली के पेट में ही पड़ा रहता।” (आयत नं. 144)

अज़ीजे मिन्न की बीबी ने हज़रत यूसूफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न से मुतास्सिर होकर उन्हें बहुत बड़े फ़िल्ने में डालने की कोशिश की तब हज़रत यूसूफ़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से इल्तिजा की-

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ
عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ

तर्जुमा : “यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा, मेरे रब! कैद मुझे मन्जूर है बनिस्वत इसके कि मैं वह काम करूँ जो यह लोग मुझ से चाहते हैं। अगर तूने इनकी चालों को मुझ से दूर न किया तो मैं उनके जाल में फँस जाऊँगा और जाहिलों में शामिल हो जाऊँगा।” (सूरह यूसुफ़, आयत : 33)

अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल फ़रमाई-

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

“यूसुफ़ के रब ने उसकी दुआ कुबूल की, औरतों की चालें उससे दूर कर दी और यूसुफ़ आज़माइश से बच गए, बेशक वही है जो सबकी सुनता है और जानता है।” (सूरह यूसुफ़, आयत : 34)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने तवील अरसे तक बीमारी में मुब्तिला रहने के बाद अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई-

أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ

“ऐ मेरे रब! मुझे बीमारी लग गई है और तू रहमान व रहीम है।” (सूरह अम्बिया, आयत : 83) अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल फ़रमाई और सेहत से नवाज़ा। अम्बियाए किराम और अहले ईमान पर दावते हक़ के रास्ते में बड़ी बड़ी कठिन आज़माइशें और परेशानियाँ आईं। क़ौम के लोगों ने किसी को क़त्ल करना चाहा, किसी को संगसार करना चाहा, किसी को जिला वतन करना चाहा, किसी को कैद करना चाहा, किसी के हाथ काटने चाहे, तब अहले ईमान ने ज़ालिमों के मुक़ाबले में अल्लाह से मदद और नुस्रत की दुआ की, तो अल्लाह ने उन्हें ज़ालिमों से नजात दिलाई। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने क़ौम

को तौहीद की दावत दी और बदकारी से रोका। कौम न मानी और हजरत लूत अलैहिस्सलाम को जिला बतन करना चाहा, फ़रिश्ते ख़ूबसूरत लड़कों की सूरत में अज़ाब लेकर आए, तब हजरत लूत अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की -

○ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ

“ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे अहलो अयाल (यानी मेरे पैरूकारों) को कौम की बदकारियों से नजात दे।” (सूरह शूरा, आयत : 173)

अल्लाह तआला ने हजरत लूत अलैहिस्सलाम को उनके अहलो अयाल समेत नजात अता फ़रमाई। फ़िरऔन के दरबार में हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों के दर्मियान मुक़ाबला हुआ। जादूगर शिकस्त खा गये और हकीकत मालूम होते ही जादूगर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए। फ़िरऔन ने उन्हें धमकी दी - “मैं तुम्हारे हाथ पाँव मुखालिफ़ सिम्तों से कटवा दूँगा और तुम सबको सूली पर लटका दूँगा।” तब जादूगरों ने अल्लाह के हुज़ूर दुआ की-

○ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ

“ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर सब्र का फ़ैज़ान कर और हमें दुनिया से इस हाल में उठा कि हम मुसलमान हों।” (सूरह आराफ़, आयत : 126) इस दुआ के बाद अल्लाह तआला ने अहले ईमान के दिल इस क़दर मजबूत कर दिये कि उन्होंने भरे दरबार में बादशाह के सामने कह दिया कि

فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ طَائِمَاتِ قِطْصِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

“तू जो कुछ करना चाहता है कर ले, तू ज़्यादा से ज़्यादा (हमारी) दुनिया की ज़िन्दगी को ही ख़त्म कर सकता है (इससे ज़्यादा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता)” (सूरह ताहा, आयत : 72)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा

में मुसलसल तेरह साल तक मसाइबो आलाम से भरपूर जद्दो-जहद फ़रमाते रहे। बिलआखिर अहले मक्का के ग़ैर इन्सानी और ज़ालिमाना सुलूक से तंग आकर इस तबक्को के साथ ताइफ़ तशरीफ़ ले गये कि शायद वहाँ के लोग मेरी बात सुनने पर आमादा हो जायें लेकिन वहाँ आपके साथ जो संगदिलाना सुलूक किया गया उससे आपको शदीद सदमा पहुँचा। आप ज़ख्मी हालत में ताइफ़ से बाहर करनुस्सआलिब के मक़ाम पर पहुँचे, थोड़ी देर आराम फ़रमाया, हवाल बहाल हुए तो अल्लाह तआला के हुजूर हाथ फैलाकर यह दर्द अंगेज़ दुआ माँगी। “इलाही अपनी कुव्वत की कमी, अपनी बे सरो सामानी और लोगों के मुक़ाबले में अपनी बे बसी की फ़रियाद तुझी से करता हूँ। तू ही मेरा मालिक है, आखिर मुझे किसके हवाले करने वाला है। क्या उस हरीफ़ बेगाना के, जो मुझ से तुर्शरूई रवा रखता है या ऐसे दुश्मन के जो मेरे मामले पर क़ाबू रखता है लेकिन अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है तो फिर मुझे कुछ परवाह नहीं, बस तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज्यादा वुसअत रखती है। मैं इस बात के मुक़ाबले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर पड़े या तेरा अज़ाब मुझ पर आए, तेरे ही नूर व जमाल की पनाह तलब करता हूँ जिससे सारी तारीकियाँ रौशन हो जाती हैं और जिसके ज़रिए दीनो दुनिया के सारे मामलात सँवर जाते हैं, मुझे तो तेरी रज़ामन्दी और खुशनूदी की तलब है, सिवाए तेरे कहीं से कोई कुव्वत व ताक़त नहीं मिल सकती।” (सीरत इब्ने हिशाम, हवाला मुहसिने इन्सानियत)

बज़ाहिर जब तमाम सहारे टूट चुके थे, उम्मीद की कोई किरन दिखाई नहीं देती थी। मक्का और ताइफ़ के सरदारों ने जुल्मो सितम और संगदिली की इन्तिहा कर दी थी। हर तरफ़ यास अंगेज़ फ़िज़ा मुसल्लत थी। आपने अपने ज़ख्मी और टूटे दिल का हाल एक इन्तिहाई रिक्कत अंगेज़ दुआ की शक़ल में मालिके हक्कीकी के सामने रख दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

यह दुआ अर्शे इलाही से पै दर पै फ़तहो नुसरत की नवैदें लेकर आई। घटा टोप अँधेरो से नूरे सहर के आसार पैदा होने लगे। इसी सफ़र में जिनों की एक जमाअत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से कुरआन सुनकर ईमान ले आई। मेराजे आसमानी के ज़रिए आपको कुर्वे इलाही का इन्तिहाई बुलन्द मुक़ाम अता किया गया, यके बाद दीगरे बैते उक़बा ऊला और बैते उक़बा सानिया अमल में आई जो रोशन मुस्तक़बिल के लिए संगे बुनियाद साबित हुई।

हकीकत यह है कि जिन्दगी में आने वाले मसाइब व आलाम, रन्जो ग़म, और मुश्किलात व मेहन, ख़्वाह इन्फ़िरादी सतह के हों या इज्तिमाई सतह के, इनसे नजात हासिल करने के लिए दुआ से ज़्यादा मुअस्सिर और क़ाबिले एतमाद हथियार कोई नहीं हो सकता जो कशमकशे हयात (जिन्दगी) में दुआ के बग़ैर जिन्दगी बसर कर रहा है, उसका अन्जाम उस सिपाही से मुख्तलिफ़ नहीं हो सकता जो घमसान की जंग में हिस्सा लेने के लिए हथियार के बग़ैर मैदाने जंग में घुस जाए।

दुआ के बारे में एक ग़लतफ़हमी का इज़ाला :

कुबूलियते दुआ के बारे में बाज़ लोग यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह तआला गुनहगार लोगों की दुआ कुबूल नहीं करता और बुजुर्गों की दुआ कभी रद्द नहीं करता। इस अक़ीदे के नतीजे में जो सूरते हाल पैदा होती है वह यह कि

1. बन्दा अल्लाह से अपने ताल्लुक़ को ख़त्म करके बुजुर्गों से मोहताजी का ताल्लुक़ कायम कर लेता है।
2. बुजुर्गों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए उनकी ख़िदमत में नज़रो नियाज़ पेश करना ज़रूरी समझता है।
3. दुआएँ कुबूल होने के बाद बन्दा बुजुर्गों को वही मक़ाम देने लगता है जो अल्लाह तआला का है और यूँ अपनी सारी जिन्दगी अल्लाह की बजाए बुजुर्गों की बन्दगी में

बसर कर देता है।

यह बिल्कुल वहीं सूरते हाल है जो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जा बजा मुस्तलिफ़ अन्दाज़ में मुशिरकीन के बारे में फ़रमाई है। दर हक़ीक़त यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह तआला गुनहगार लोगों की दुआ कुबूल नहीं करता, किताबो सुन्नत के सरासर ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला का इरशाद मुबारक है-

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ

عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ○

तर्जुमा : “(लोगो) तुम्हारा रब कहता है कि तुम सब मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा, जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं (यानी नहीं माँगते) वह ज़लीलो ख़वार होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।” (सूरह मोमिन, आयत : 60)

एक हदीस में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे मुबारक है- “जो शख्स अल्लाह से दुआ नहीं करता, अल्लाह उससे नाराज़ होता है।” (बहवाला तिरमिज़ी) मज़कूरा बाला आयत और हदीस में तमाम मुसलमानों को, ख़्वाह नेक हों या गुनहगार बिला इस्तिस्ना हुक़म दिया है कि अल्लाह तआला से ज़रूर दुआ करो और दुआ न करने वालों को सज़ा का फ़ैसला भी सुना दिया।

अल्लाह के नज़दीक शैतान से ज़्यादा मलऊन और मातूब कोई नहीं हो सकता। उसने खुल्लमखुल्ला अल्लाह के हुक़म की नाफ़रमानी की, अल्लाह तआला ने उसे मरदूद करार दिया। लेकिन इसके बावजूद जब उसने अल्लाह से दुआ की-

رَبِّ فَانظُرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ

“ऐ मेरे रब! मुझे क़यामत के दिन तक (लोगों को

गुमराह करने की) मोहलत दे।" तो अल्लाह तआला ने उसकी यह दुआ कुबूल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया -

○ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ○

“कहा, तुझे मुकर्रर दिन के वक़्त (यानी क़यामत) तक के लिए मोहलत है।” (सूरह हुजरात, आयत : 36-38)

शैतान की यह दरख़्वास्त किसी नेक मक़सद के लिए ना थी बल्कि बन्दों को गुमराह करने के लिए थी तब भी अल्लाह ने उसकी दुआ रद्द नहीं फ़रमाई। इसके बावजूद यह समझना कि गुनहगारों की दुआ अल्लाह कुबूल नहीं फ़रमाता, महज़ शैतानी फ़रेब है। वह ज़ात बा बरकात जो इतनी रहीम व करमी है कि अपने दुश्मनों, बागियों और सरकशों को ज़िन्दगी भर हर तरह की नेमतों से नवाज़ती चली जाती, उनकी सारी ज़रूरतें और हाज़तें पूरी करती है तो फिर यह कैसे मुम्किन है कि उसके अपने बन्दे उससे कोई चीज़ माँगें तो वह ना दे?

जिस तरह यह अक़ीदा बातिल है कि अल्लाह तआला गुनहगारों की दुआ कुबूल नहीं करता, उसी तरह यह अक़ीदा भी बातिल है कि अल्लाह तआला बुजुर्गों की दुआएँ कभी रद्द नहीं करता।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने बेटे को तूफ़ान में ग़र्क़ होते देखा तो अल्लाह तआला से दुआ की -

○ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكِيمِينَ ○

“ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा सच्चा है (लिहाज़ा उसे बचा ले) तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है।” (सूरह हूद, आयत : 45) अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की यह दुआ ना सिर्फ़ यह कि रद्द फ़रमा दी बल्कि साथ में यह भी इरशाद फ़रमाया -

إِنِّي أَعْظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ○

‘ऐ नूह! मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि अपने आपको जाहिलों की तरह न बना ले’ (सूरह हूद, आयत : 46)

क़यामत के दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से अर्ज करेंगे- ‘ऐ मेरे ख़्वा! तूने मुझसे वादा फ़रमाया था कि क़यामत के दिन मुझे रुसवा नहीं करेगा, लेकिन मेरी रुसवाई इससे ज़्यादा क्या हो सकती है कि मेरा बाप तेरी रहमत से महरूम है।’ अल्लाह तआला इरशाद फ़रमायेगा - ‘मैंने जन्नत काफ़िरो के लिए हराम कर दी है।’ चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़्वाहिश को रद्द करते हुए अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद को बिज्जू बनाकर जहन्नम में डाल देगा। (बुख़ारी)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के लिए तीन दुआएँ कीं। (1) मेरी उम्मत क़हत से हलाक ना हो। (2) मेरी उम्मत ग़र्के आम से हलाक ना हो। (3) मेरी उम्मत में ख़ाना जंगी ना हो। अल्लाह तआला ने पहली दो दुआएँ कुबूल फ़रमा लीं, लेकिन तीसरी दुआ कुबूल नहीं फ़रमाई। (मुस्लिम)

पस यह समझना कि अल्लाह तआला किसी नबी, वली या बुजुर्ग की दुआ कभी रद्द नहीं करता बिल्कुल बातिल अक्कीदा है। सही इस्लामी अक्कीदा यह है कि -

अव्वलन हर शख्स को अपने लिए खुद अल्लाह तआला से दुआ माँगनी चाहिए क्योंकि यह अल्लाह तआला का वाज़ेह हुक्म है जबकि किसी नेक आदमी से दुआ करवाना जाइज़ तो है लेकिन इसका हुक्म कहीं नहीं दिया गया है। सानियन कुबूलियते दुआ का इन्हिसार मुकम्मल तौर पर अल्लाह तआला की मर्ज़ी और मसलिहत पर है, वह जब चाहे, जिसकी चाहे और जितनी चाहे दुआ कुबूल करे, जिसकी चाहे रद्द करे।

तावीज़ गंडे के खतरात और शैतानी असरात

जब मोमिन बन्द के दिल में अपने परवरदिगार से मुताल्लिक यह बात बैठ जाये कि यक्कीनन अल्लाह तआला ही पूरी बादशाही का मालिक है। वह अपनी बादशाही में जिस तरह चाहे तसरूफ़ करता है, पूरी कायनात में कोई भी उसके हुक्म के बिना किसी मामले की तदबीर की ताक़त नहीं रखता, मख़्लूक की परेशानियाँ उसी के हाथ में हैं, वह जो चाहता है हो जाता है और जो नहीं चाहता नहीं होता, तब बन्दा लोगों के साथ अपने तमाम ताल्लुकात ख़त्म करके सिर्फ़ एक अल्लाह तआला पर भरोसा रखता है जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ

“और अल्लाह पर जो भरोसा रखता है, उसके लिए अल्लाह तआला काफ़ी है।” (सूरह तलाक़ : 3)

जो शख्स इस मर्तबे को पहुँच गया वह सबसे बहादुर लोगों में होता है, वह किसी भी मख़्लूक से नहीं डरता, सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला भी वही होता है इसलिए कि उसका ताल्लुक़ दुनिया के परवरदिगार के साथ होता है। लोगों के हाथों में जो कुछ है उस से वह बेज़ार होता है, क्योंकि वह जानता है कि अल्लाह तआला ही सब बातों की तदबीर करता है, फिर वह अल्लाह तआला ही की ओर रुजूअ करता है इसलिए कि उसे यह मालूम है कि मख़्लूक के सारे मामलात की तदबीर अल्लाह तआला ही करता है।

कुछ कमज़ोर ईमान लोग यह अक्कीदा रखकर ग़लती करते

हैं कि कुछ मख्लूक भी चाहे वह नबी हों या वली, कायनात के अन्दर तसरूफ़ करते हैं, वह नफ़ा पहुँचाते हैं और मुसीबतों को टालते हैं या यह एतिक़ाद रखते हैं कि वली और पीर वग़ैरह किसी को धागा या तावीज़ और गंडा वग़ैरह देकर नफ़ा नुक़सान पहुँचाने की ताक़त रखते हैं जैसाकि कोई तावीज़ इस मक़सद से पहनता है कि उसके यहाँ औलाद पैदा हो, या बिच्छू का ज़हर दूर हो जाए, या शैतान के ख़ौफ़ से महफूज़ रहे, या किसी से मुहब्बत हो जाए या किसी से नफ़रत करने लगे वग़ैरह। इस तरह के लोग दो तरह की ग़लतियों में मुब्तिला होते हैं।

1. वह यह अक़ीदा रखने लगते हैं कि अल्लाह के अलावा भी कोई नफ़ा और नुक़सान का मालिक है जबकि यह अक़ीदा रखना अल्लाह तआला के साथ शिर्क है। अल्लाह तआला का फ़रमान है-

قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ

“आप उनसे कहिए कि अच्छा यह तो बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहे तो क्या यह उसके नुक़सान को हटा सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझ पर मेहरबानी का इरादा करे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि अल्लाह मुझे काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।” (सूरह जुमर : 38)

और अगर इसके सिवा वह एतिक़ाद रखें कि ग़ैरुल्लाह ख़द नफ़ा नुक़सान का मालिक तो नहीं मगर नफ़ा नुक़सान के लिए सबब और ज़रिआ है। तो यह बिना किसी दलील के अल्लाह

तआला के ऊपर इलजाम लगाना है, आखिर इस की क्या दलील है कि वह अल्लाह की तरफ से जरिआ है। इसलिए अगर किसी ने बिना किसी शर्ई या हिस्सी दलील के (जैसे मेडिकल दवाओं की शरीअत ने इजाजत दी है) किसी चीज को सबब या बरकत की वजह समझा तो उसने अल्लाह के साथ शिके असगर का गुनाह किया।

2. ऐसे काम करने से गैरुल्लाह के साथ ताल्लुक बनता है और जिसने गैरुल्लाह के साथ ताल्लुक बनाया उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है और जो गैरुल्लाह के हवाले कर दिया जाए वह हकीकत में कमजोरी, लाचारी और जिल्लत के हवाले कर दिया जाता है।

तावीज़ गंडे की हु्रमत हदीसों की रोशनी में -

बहुत ज़्यादा ऐसी हदीसें हैं जिनमें तावीज़ बगैरह लटकाने से मना किया गया है, चाहे वह कुरआनी आयात ही के क्यों न बने हों। इसलिए इमाम अहमद और अबू दाऊद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद र.अ. से रिवायत किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

إِنَّ الرُّقِيَ وَالْتَّمَائِمَ وَالتَّوَلَةَ شُرُكٌ.

“यक्कीनन” झाड़-फूँक, तावीज़ और मियाँ-बीबी के बीच मुहब्बत पैदा करने के लिए किसी चीज को पहनना शिक है। (अल्लामा अलबानी रह. ने इसकी सनद को सही कहा है, सिलसिला सहीहा : 2972)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक्कीम ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

مَنْ تَعَلَّقَ شَيْئاً وَكَلَّ إِلَيْهِ.

“जो शख्स कोई चीज गले वगैरह में लटकाये तो उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।” (तिर्मिजी, अहमद, सही)

तावीज लटकाने वाले के ऊपर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहूआ फ़रमाई है कि अल्लाह तआला ऐसे आदमी की दुआ पूरी ना करे और उसे अराम व सुकून हासिल ना हो। हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि.अ. ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

مَنْ تَعَلَّقَ تَمِيْمَةً فَلَا أَتَمَّ اللَّهُ لَهُ وَمَنْ تَعَلَّقَ فَلَا وَدَعَ اللَّهُ لَهُ

“जिसने तावीज, मनका वगैरह लटकाया अल्लाह उसकी दुआ पूरी ना करे और जिस ने कोई सीप बाँधी अल्लाह उसे भी आराम और चैन ना दे।” (इस हदीस को इमाम अहमद और अबू याला ने रिवायत किया है, इमाम हाकिम रह. ने इसे सही इस्नाद कहा है और इमाम ज़हबी ने ताईद की है।)

इमाम अहमद और तिर्मिजी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ीम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

مَنْ تَعَلَّقَ تَمِيْمَةً فَقَدْ أَشْرَكَ.

“जिस ने तावीज लटकाया उसने शिर्क किया।” (इसे इमाम हाकिम रह. ने भी रिवायत किया है और उसके रावी सिक़ा हैं)

इसी तरह इमाम अहमद ने हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख्स के हाथ में पीतल का बना कड़ा देखा तो पूछा : यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह कमजोरी से बचने

के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

أَنْزَعَهَا فَإِنَّهَا لَا تَزِيدُكَ إِلَّا وَهْنًا فَإِنَّكَ لَوْ مِتَّ وَهِيَ عَلَيْكَ مَا أَفْلَحْتَ أَبَدًا.

“इसे उतार कर फेंक दो, इसलिए कि यह कमजोरी ही में बढ़ोतरी करेगा, और अगर इसे पहने हुए तेरी मौत हो गई तो तू कभी कामयाब नहीं हो सकता।”

तावीज़ और गण्डे सहाबा किराम, ताबिईन और उलमाए किराम की नज़र में-

इब्ने अबी हातिम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने एक आदमी के हाथ में बुखार से बचने के लिए एक धागा बंधा हुआ देखा तो उन्होंने उसे काट दिया और कुरआन मजीद की यह आयत तिलावत फ़रमाई-

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ○

“इन में से अकसर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशिरक ही हैं।” (सूरह यूसुफ़ : 106)

इमाम अहमद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की अहलिया हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से एक रिवायत बयान की है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद जब किसी काम को ख़त्म करके अपने घर लौटते तो दरवाज़े पर पहुँचकर ज़रूर ख़ाँसते, ताकि मैं ख़बरदार हो जाऊँ और अपनी हालत सँभाल लूँ। एक बार वह ऐसे वक़्त घर पर आए जब मेरे पास एक बूढ़ी औरत बैठी हुई थी, वह मुझे हमरता (एक क्रिस्म की बीमारी है जिसमें लाल दाने निकल आते हैं और बहुत बुखार आता है) से ठीक होने के लिए झाड़-फूँक कर रही थी, अब्दुल्लाह

के खाँसने की आवाज़ सुनकर मैंने उसे चारपाई के नीचे छिपा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह घर में आए और मेरे बगल में बैठ गए, उनकी नज़र मेरे गले में लटके धागे पर पड़ गई। उन्होंने तअज्जुब से पूछा, यह कैसा धागा है? मैंने जवाब दिया कि इस धागे में मेरे लिए झाड़-फूँक की गई है, उन्होंने उसे काटकर फेंक दिया और कहा यक़ीनन अब्दुल्लाह का खानदान शिर्क से پاک है, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना -

إِنَّ الرُّقِيَّ وَالتَّمَائِمَ وَالتَّوَلَةَ شِرْكٌ.

“यक़ीनन झाड़-फूँक, तावीज़ गंडे और मियां बीवी के बीच मुहब्बत पैदा करने के लिए किसी चिज़ को पहनना शिर्क है।”

हज़रत ज़ैनब कहती हैं कि इस पर मैंने कहा: आप तो ऐसा कहते हैं पर एक बार मेरी आँखें फड़कने लगीं, मैं फ़ूलाँ यहूदी के पास झाड़-फूँक के लिए जाती थी, जब वह झाड़-फूँक करता तो आँखों की फड़फड़ाहट खत्म हो जाती। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा यह तो शैतान का काम है, वह तेरी आँखों में अपना हाथा चुभो देता और झोड़-फूँक करने पर छोड़ देता, तेरे लिए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई यह दुआ काफ़ी थी-

اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، مُذْهِبَ الْبَاسِ، اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي إِلَّا أَنْتَ

الشَّافِي لَا شَافِيَ إِلَّا أَنْتَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا.

“ऐ लोगों के परवरदिगार! बीमारी दूर करने वाले, शिफा दे, तू ही शिफा देने वाला है, तेरे सिवा कोई शिफा देने वाला नहीं है, शिफा तेरी ही है, ऐसे शिफा दे जो किसी बीमारी को रहने ना दे।”

इमाम मुंज़री रह. ‘तमायम’ के बारे में फ़रमाते हैं यह एक

क्रिस्म का धागा और दाना बगैरह होता था, जिसे लोग मुसीबतें दूर करने के लिए पहनते थे जबकि यह जिहालत और गुमराही है, क्योंकि एक अल्लाह के अलावा कोई मुसीबत और दुख से बचाने वाला नहीं है।

अबू अल-सादात रह. फ़रमाते हैं : 'तमायम' तमीमह की जमा है, यह एक तरह के पत्थर के दाने होते थे, जिन्हें अरब अपनी औलाद के गलों में बुरी नज़र और आफ़ात से बचने के अक़ीदे से पहनाया करते थे इसलिए इस्लाम ने उस अक़ीदे को ग़लत कहा है।

अबू उबैद रह. फ़रमाते हैं - अरब के लोग ऊँटों के गलों में तांत (चमड़े की बटी हुई रस्सी) लटकाते थे ताकि उन्हें जादू और बुरी नज़र ना लगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तांत बगैरह काटकर फेंक देने का हुक्म दिया और ख़बरदार किया कि तांत, धागा बगैरह अल्लाह तआला के हुक्म का ज़रा भी नहीं टाल सकता। इसी तरह के कुछ काम टैक्सी और ट्रक ड्राइवर बगैरह करते हैं, वह काले रंग के प्लास्टिक के पट्टे या धागे अपनी गाड़ियों के साथ इस हालत में लटकाते हैं कि यह चीज़ें उन्हें हादसात, तकलीफ़ या परेशानी बगैरह से महफूज़ रखेंगे, मगर इस तरह के काम भी शिर्क हैं क्योंकि जिन चीज़ों को अल्लाह ने हादसात से बचने का सबब नहीं बनाया, उन्हें हम सब बना रहे हैं।

नफ़िसयाती बीमारियाँ और उनका इलाज

इंसान की जिसमानी बीमारियों के इलाज में दवाओं, जड़ी बूटियों और ऑप्रेशनों पर तवज्जा दी, और अल्लाह पर इमान, उस से ताल्लुक और कुरआन करीम व ज़िक्र व दुआ के ज़रिए इलाज को फरामुश कर दिया। जिस से इंसान को रूहानी कुव्वत मिलती है और जिस से इंसान खूद को बहुत सी नफ़िसयाती और जिस्मानी बीमारियों में पड़ने से बचा सकता है या इनमें पड़ने के बाद बआसानी इन से निजात हासिल कर सकता है।

इसी लिए आप देखेंगे कि एक मुसलमान जिसके अन्दर इमान व तक्वा होता है वह अकसरो बेशतर इन बीमारियों से महफूज़ होता है। उसे दली सुकून रहता है, ख़ूश व ख़ुरम और पुर उम्मीद होता है, भले ही इसकी ज़िन्दगी में मादी तंगी हो और कुछ मुआशरती मुशकिलात वगैरा से दो चार हो, जिस से कोई भी शख्स महफूज़ नहीं रहता।

दूसरी जानिब आप देखेंगे कि जब उसे कोई बीमारी होती है तो सब से पहले मशरूई इमानी दवाओं से इलाज करता है और किताबो सुन्नत से अख़ज़ करता है, फिर अल्लाह की हलाल कर्दा दिगर तिब्बी सहुलियात अपनाता है। जिन का असर और नफ़ा साबित है, इन दोनों दवाओं के मजमूऐ से उसे दुनिया की आफियत भी अल्लाह के हुक्म से हासिल होती है और आखिरत में अजर भी। इन्शा अल्लाह मिलेगा।

इस लिए हम मुसलमान इमानी तक्वीयत के इन्तेहाई ज़रूरतमन्द हैं ताकि अमनो अमान की ज़िन्दगी गुज़ार सकें। और

सआदत व दिली इतमिनान हासिल हो।

इस से मालूम होता है कि इन बीमारियों से बचने और शिफायाम होने का तरीका दो मरहलों से गुजरता है:

पहला मरहला : हिफाजत और बचाव का मरहला, एक मुस्लिम मर्द व औरत, छोटे व बड़े के लिए यह इन्तेहाई अहम है, इस के लिए हम सब को इस की ख्वाहिश करना चाहिये क्योंकि यह अल्लाह के हुक्म से बहुत सी बीमारियों के दफा और बचाव में मददगार है। जैसा कि कहा जाता है : बचाव इख्तियार करना इलाज से बहेतर है।

दूसरा मरहला : इलाज है, यानी बीमारी से दो चार होने के बाद उसे खत्म करने के लिए इलाज करना, और यह शरइ झाड़ फूंक और दीगर नफसियाती और तिब्बी इलाजात के ज़रिए बीमारियों को दूर करना।

इन दोनों मरहलों की तफसील आप के सामने पेश की जा रही है :

बीमारियों से नफ़स का बचाव

एक मुसलमान का इस्लामी तालीमात और इस के कौली व फेली आदाब का पाबन्द होना और हर रोज़ उसे अपनी ज़िन्दगी के मुख्तलिफ हिस्सों में नाफ़िज़ करना ख्वाह इस का ताल्लुक इबादत से हो या अख़लाक़ियात व इज्तेमाईयत वगैरा से और अल्लाह ने जिन इबादात व इताअत का हुक्म दिया है उन्हें बजा लाना और तमाम ना फरमानियों और हराम कर्दा चीज़ों से बचना, यह तमाम चीज़ें अल्लाह के हुक्म से दिली सुकून की ज़ामिन हैं और नफस को तमाम नफसियाती रूहानी और जिस्मानी मरज़ से बचा सकती हैं।

इस लिए इस्लाम ने हमें तमाम तालीमात और आदाब, दुआओं और अज़कार को अपनाने की दावत दी है, जब हम

उसके मुकम्मल तौर पर पाबन्द हो जायेंगे तो इन्शा अल्लाह नफसियाती बीमारियों से हमारी हिफाज़त के लिए ढाल बनेंगे, और शैतानी वसवसों और ज़िन्दगी के मुशिलात से बचाव करेंगे। और इस दुनिया में मुसलमान की सआदत और इतमीनान व वक़ार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का सबब बनेंगे।

बाज़ अहम वज़ाइफ़ व अज़कार दर्ज जैल है :

1. तमाम वाजिबात पर अमल करना, खास तौर पर मर्दों के लिए पांचों वक़्त की नमाज़ें, मस्जिद में बा जमाअत इतमेनान व खुशूअ के साथ अदा करना।
2. तमाम गुनाहों और ना फरमानियों से दूर रहना, इन से तौबा करना छोटे बड़े गुनाहों से बचना खास तौर पर इस ज़माना में जिसका बहुत से लोग इरतेकाब करते हैं यानी गाने और मियूज़िक सुनना, फिल्म और गन्दे डरामे देखना जो दिल में इमान को कमज़ोर कर देते हैं और निफाक़ पैदा करते हैं। और ऐसे शख्स पर जिन्नात व शैयातीन को मुसल्लत कर देते हैं।
3. पाबन्दी के साथ रोज़ कुरआन करीम की तिलावत करना।

सुबह व शाम के अज़कार

- (1) सूरह इखलास, सूरह फलक़ सूरह नास (फजर व मगरिब के बाद तीन तीन बार) (अबू दाऊद 5082)
- (2) अल्लाहुम्मा अन्त रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता खलक़तनी व अना अ़बदुका व अना अला आहदिका व वादिका मसतताअ़त, आ-ऊजुबिका मिन शरि मा सनाअत, अबूऊ लका बिनिअ़मतिका अलय्या व अबूऊ बिजम्बी फग़फिरली फइन्नहु ला याग़फिरुज़्जुनूबा इल्ला अन्त। (बुखारी-6306) (फजर व मगरिब के बाद एक बार)

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوؤُكَ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوؤُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ.

- (3) बिस्मिल्लाह-हिल्लज़ी ला यदुरू म-अ इस्मिही शैउन फिल अर्दि वला फिस-समाई व हुवस-समीउल अलीम (फजर व मगरिब के बाद तीन बार) (अबू दाऊद 5077)

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

- (4) आ-ऊजू बि-कलिमातिल्लाहि-ताम्माति मिन शरि मा खलक। (मगरिब के बाद तीन बार) मुसनद अहमद 2/290)

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

- (5) सुबहान-अल्लाहि व बिहमदिहि (फजर और मगरिब के बाद 100 बार) (मुस्लिम 2692)

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ.

- (6) अस्तगफिर-उल्लाह व अतूबु इलैहि (दिन में 100 बार) (मुस्लिम 2702)

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ.

- (7) ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन कदीर (फजर के बाद 100 बार) (बुखारी -3293)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ -

- (8) अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला नबी-ईना मुहम्मद
(फजर व मगरिब के बाद 10 बार)(अलबानी सही
अल-तरगीब व तरहीब 1/293)

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

सोते वक़्त के अज़कार

नोट: सोने से पहले वुजु ज़रूर कर लें।

- (1) दोनों हथेलियाँ मिलाकर (सूरह इखलास, सूरह फलक
और सूरह नास) पढ़कर इन पर थुथकारना और हाथ को
सर, चेहरा और जिस्म के सामने के हिस्से से शुरू करते
हुए जहाँ तक मुम्किन हो तीन बार फेंरें। (बुखारी 5017)
- (2) आयतल कुर्सी पढ़ें। (बुखारी 2311)
- (3) सूरह बकरह की आखिरी दो आयतें (आयत नं.285 व
286) पढ़ें। (मुस्लिम 807)
- (4) सूरह मुल्क (सूरह नं.67) पूरी पढ़ें। (अलबानी सहीहुल
जामे व सगीर 4/255)
- (5) अल्लाहुम्मा किनी अज़ाबका यौमा तबअसु इबादका (3
बार) (मुस्लिम 2711)

اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

- (6) अल्लाहुम्मा बिस्मिका अमूतु वा अहया। (बुखारी 6324)

اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا.

- (7) सुबहान अल्लाह سُبْحَانَ اللَّهِ (33 बार)

अल-हम्दु लिल्लाह الْحَمْدُ لِلَّهِ (33 बार)

- अल्लाहु अकबर **اللَّهُ أَكْبَرُ** (34 बार) (बुखारी 5327)
- (8) बिस्मिका रब्बी वजाअतु जन्बी व बिका अरफउहु, इन असकनतु नफसी फरहमहा वइन अरसलतहा फहफजहा बिमा तहफजा बिही इबादिकास्सालिहीन।(सोते वक्त बिस्तर साफ करके पढ़ें।)(बुखारी 6320)

بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ، إِنَّ أُمْسَكْتَ نَفْسِي
فَارْحَمْهَا وَإِنْ أُرْسَلْتَهَا فَاخْفِظْهَا بِمَا تَخْفِظُ بِهِ عِبَادِكَ
الصَّالِحِينَ.

फर्ज नमाज़ के बाद के अज़कार

- (1) अल्लाहु अकबर **اللَّهُ أَكْبَرُ** (1 बार)
- (2) अस्तग़फिरुल्लाह **أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ** (3 बार)
- (3) अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामु व मिनकस्सलामु तबारकता या ज़लजलालि वल इकराम। (मुस्लिम 591)

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ
وَالْإِكْرَامِ.

- (4) ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लिल शैइन कदीर, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा अअतैता वला मुअतिया लिमा मनअता वला यनफऊ ज़ल जददि मिनकल जद्। (बुखारी 844, मुस्लिम 593)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا
مَنْعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

- (5) ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन कदीर, ला होऊला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु वला नअबुदु इल्ला इय्याहु, लहुन्नेअमतु वलहुल फज़्लु वलहुस्सनाऊल हसन, ला इलाहा इल्लल्लाहु मुख्लसीना लहुद्-दीना वलऊ करिहल काफिरून। (मुस्लिम 594)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ. لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ. لَهُ التَّعَمُّةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الشَّانُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ.

- (6) . सुबहान अल्लाह (33 सुबْحَانَ اللَّهِ बार)
- . अल-हम्दु लिल्लाह (33 الْحَمْدُ لِلَّهِ बार)
- . अल्लाहु अकबर (33 اللَّهُ أَكْبَرُ बार)
- . ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन कदीर (1 बार) (मुस्लिम 897)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. (حديث)

- (7) **आयतलु कुर्सी:**

अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हई-उल कय्यूम, ला ता खुजुहु सिनतुर्वे वला नऊम, लहु मा फिस-समावाति व मा फिल अर्द, मन ज़ल्लज़ी यशफऊ इन्दहु इल्ला बिइज़निह, यालमु मा बयना अैदिहिम व मा खलफहुम वला युहीतूना

बि-शैम मिन इल्मही इल्ला बिमा शाआ, व सियाकुर्सिहुस
-समावाति वल अर्द, वला यरुदुहू हिफजुहुमा, व हुवल
अलीय्युल अज़ीम। (निसई 100)

آية الكرسي : اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ
سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي
يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ.

(8) **सूरह इखलासः**

कुल हुवल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद वलम
यूलद वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद (1 बार)

سورة اخلاص : قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ
يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

(9) **सूरह फलकः**

कुल आरुजु बि-रब्बिल फलक, मिन शरि मा खलक, व
मिन शरि ग़ासिकिन इज़ा वक़ब, व मिन शरिन नफ़ासाति
फिल उक़द। (1 बार)

سورة فلق : قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي
الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

(10) **सूरह नासः**

कुल अरुजु बि-रब्बिन-नासि, मलिकिन्नास, इलाहिन्नास,

मिन शरिल वसवासिल खन्नास, अल्लजी युवसविसु फी सुदूरिन-नास, मिनल जिन्नति वन्नास।(1 बार)(अबू दाऊद-1523)

سورة ناس: قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ إِلَهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○

रूक़िया क्या है?

रूक़िया से मुराद कुरआनी आयात, मुश्किलात से पनाह मांगने वाली दुआएँ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित शुदा दुआओं का मजमूआ हैं जिसे मुस्लिम अपने ऊपर या बीबी बच्चों पर किसी नफसियाती मरज़ के इलाज़ के लिए पढ़ता है, और जिन्नात व इंसानों की नज़रे बद से बचने के लिए या शैतानी वसवसा, जादू और दूसरी जिसमानी बीमारियों से शिफायामी के लिए पढ़ता है।

यही शरई रूक़िया है, यह जादू या शोबदा बाज़ी नहीं जैसा कि बाज़ लोग समझते हैं न ही कोई ना पसन्दीदा बिदअत है जिस की दीन में कोई असल ना हो।

इसलिए लोगों के ज़ेहनों में जब रूक़िया का यह ग़लत महदूद मतलब पैदा हुआ तो इलाज और शिफा की तलाश में या तो जादूगरों, शोबदा बाज़ों और दज्जालों की तरफ मुतवज्जा हुये, हालांकि मुसलमान के अक़ीदा के मुताबिक यह कितना ख़तरनाक है यह किसी से पोशीदा नहीं, या लोगों ने अपनी मुख़्तलिफ़ बीमारियों का इलाज तरक़ कर दिया जिस की वजह से उन्हें

तक्लीफ़ हुई और ऐसे बुरे आसार इनकी ज़िन्दगी में रूनुमा हुये जिसे अल्लाह ही जानता है, यह सब जिहालत और इन बीमारियों में रूक़्या की फायदे को मामूली समझने की वजह से हुआ।

रूक़्या की मशरूईयत

यह चीज़ साबित है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रूक़्या का हुक्म दिया, ख़ूद भी किया और इस पर लोगों को बरकरार रखा, इस की बहुत सारी दलीलें हैं:

1. आयश रज़ियल्लाहु अन्हा का कौल है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई शिकायत होती तो अपने ऊपर पढ़ कर फूंकते, जब आप की बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार कर ली तो मैं आप पर पढ़ती और हुसूल बरकत के लिए आप ही का दाहिना हाथ आप के जिसम पर फेरती (मुस्लिम)

2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान

«لَا بَأْسَ بِالرَّقِيِّ مَا لَمْ تَكُنْ شِرْكَاءَ» (مسلم)

(रूक़्या अगर शिर्क ना हो तो इस में कोई हर्ज नहीं)

3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद

«مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَنْفَعَ أَحَاةً فَلْيَفْعَلْ» (مسلم)

(जो शख्स अपने भाई को फायदा पहुंचा सकता हो वह फायदा पहुंचाये)

4. उस लौण्डी के लिए जिसके चेहरे में पिलापन (ज़रदी) थी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान :

«اسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ» (بخاری)

(इस पर रूक़्या करो क्योंकि उसे नज़र बद लग गई है)

5. आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का कौल है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे नज़र बद झाड़ने का हुक्म देते थे (मुस्लिम)

6. क्या रूक़िया किसी मख़सूस मुतअयन मरज़ के लिए है?

ज़हन में यह बात आ सकती है कि रूक़िया, नज़र बद, जादू और शैतानी वसाइस वगैरा के लिए ख़ास है, दूसरी जिस्मानी, नफसियाती या रूहानी बीमारियों में इस की कोई तासीर या नफा नहीं, यह बात दुरूस्त नहीं बल्कि यह रूक़िया के मुतालिक ग़लत तसव्वुर है जिस की तसहीह ज़रूरी है ताकि अपनी तमाम मानवी बीमारियों के इलाज में इस से फायदा उठा सकें।

रूक़िया की तमाम बीमारियों में फायदे पर कुरआन व हदीस की बहुत सारी दलीलें मौजूद हैं, यह किसी ख़ास बीमारी के साथ ख़ास नहीं, चन्द दलीलें दर्ज ज़ैल है :

कुरआनी दलीलें

कुरआन करीम में बहुत सारी आयात हैं जो बहुत सी बीमारियों में रूक़िया के फायदे पर दलालत करती हैं मसलन :

अल्लाह तआला का फरमान :

﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءً ﴾ فصلت ४४

आप कह दीजिए! कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफा है (सूरह फुस्सिलत : 44)

﴿ وَنُنزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴾ الاسراء ८२

यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है (सूरह इसरा : 82)

यहाँ (मिन) बयान जिन्स के लिए है, ऐसी सूरत में मुकम्मल कुरआन शिफा है जौसा कि इस आयत में है, अल्लाह तआला का इरशाद है :

﴿يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمٌ مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَ شِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ﴾ يونس ٥

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसी चीज़ आई है जो नसीहत है और दिलों में जो रोग हैं उन के लिए शिफा है और रहनुमाई करने वाली है और रहमत है ईमान वालों के लिए (सूरह यूनस : 57)

सुन्नते नबी की दलीलें

1. जिबरईल अलैहिस्सलाम का रूक़िया करना, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो कहा : मुहम्मद आप के तकलीफ़ है? फरमाया : हाँ, जिबरईल ने कहा :

”بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُُّوْذِيْكَ، مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللّٰهُ يَشْفِيْكَ، بِاَسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ“ (مسلم)

(हर चीज़ की तकलीफ से अल्लाह का नाम लेकर आप को रूक़िया करता हूँ, हर नफ़स की बुराई और हर हसद करने वाली आंख से, अल्लाह आपको शिफा दे, अल्लाह के नाम से आप को रूक़िया करता हूँ)

जिबरईल का फरमान : ”مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُُّوْذِيْكَ“ तमाम बीमारियों में रूक़िया की उमूमियत का फायदा देता है।

2. उस्मान बिन अबी अलआस सक़फी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की कि इस्लाम लाने के बाद बराबर उनके जिस्म में दर्द रहता है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपना हाथ जिस्म में दर्द की जगह पर रखो और (बिसिमल्लाह) तीन बार कहो, और सात मरतबा कहो :

”أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأَحَاطِرُ“ (احمد)

(अपनी तमाम बीमारियों से अल्लाह की इज्जत व कुदरत की पनाह चाहता हूँ)

इसी तरह और दूसरी हदीसें भी वारिद हैं जिनका इस मुख्तसर रिसाला में हम जिक्र नहीं कर सकते, दौरे हाज़िर में बाज़ जिस्मानी बीमारियों में रूक़िया पर हमें तअज्जुब होगा, या यह कि रूक़िया से क्या इस में भी कुछ फायदा हो सकता है? लेकिन बुख़ार का रूक़िया, बिछ्छू के ढंक मारने पर, पेशाब रूकने, जख़्म और दर्द सर वगैरा का रूक़िया इस की बरकत पर दलालत करता है इसी से तमाम बीमारियों में इसके फायदा बख़्श होने पर दलालत हो रही है। (ज़ादुल माद, इब्ने कैइम स. 18-149, जिल्द 4)

रूक़िया का फायदा कब होता है?

इस सवाल का जवाब देना बड़ा अहम है क्योंकि कोई आदमी कभी खूद अपना रूक़िया करता है या दूसरों का करता है, मगर मुतवक्के असर, या जल्द शिफा नहीं पाता, इस वक़्त इसके दिल में रूक़िया की फायदे के मुतालिक शक पैदा होता है और बिजा सवाल करता है : जो लोग इस रूक़िया के फायदे के कायल हैं उन की बात कहाँ गई, मैंने खूद अपना रूक़िया किय मगर मरज़ में कोई शिफायाबी नहीं दिखी और ना हालत में कोई तब्दीली आई?

इस किस्म के सवालात का जवाब देते हुये इब्ने कैइम रह. फरमाते हैं : यहाँ एक बारीकी है जिसे समझना ज़रूरी है वह यह है कि कुरआनी आयात, अज़कार, दुआएँ जिनका शिफा के लिए रूक़िया किया जाता है बिला शुब्हा यह बजाते खूद नफा बख़्श और बाइसे शिफा है। मगर इनकी क़बूलियत और असर अमल करने वाले की कुव्वत की मुतक़ाजी है, तो जब भी शिफा में देर

हो तो यह फायल के तासीर में कमी या मुन्फइल की अदमे कबूलियत की वजह से होता है या किसी और कवी माने के सबब जो दवा की कामयाबी से माने होता है । (अल जवाबुल काफी, इब्ने कैइम स. 38)

फिर दूसरी जगह ज़ादुल माद में फरमाया : रूक़िया से इलाज करने के लिए दो चीज़ें चाहिये : एक चीज़ मरीज़ की तरफ से दूसरी चीज़ इलाज करने वाले की तरफ से, मरीज़ की जानिब से कुव्वत नफस और अल्लाह की तरफ सच्चा लगाव होना चाहिये और इस बात का पुख्ता यकीन कि कुरआन करीम मोमिनों के लिए बाइस शिफा और रहमत है और सहीह तरीका से दुआ कराना जिस पर ज़बान व दिल का इत्तेफाक़ हो, क्योंकि रूक़िया एक किस्म की लड़ाई है और लड़ाई करने वाला बगैर दो चीज़ों के कामयाब नहीं हो सकता ।

अव्वल : बज़ाते खूद हथियार उम्मदा हो ।

दोम : कलाई और बाजू ताक़तवर हो ।

जब भी इन में से कोई चीज़ कमज़ोर होगी तो हथियार का कोई ख़ास फायदा नहीं होगा । फिर अगर दोनों चीज़ें कमज़ोर हों तो क्या होगा ? जब दिल तौहीद, तवक्कुल, तक्वा और अल्लाह की तरफ तवज्जेह से खाली हो, फिर कहाँ कोई हथियार रह गया । इसी तरह मुआलिज की जानिब से भी दोनों चीज़ें होनी चाहियें (कुरआन व सुन्नत) (ज़ादुल माद, इब्ने कैइम 4/54)

रुहानी और नफसियाती बीमारियों की अलामतें

1. अल्लाह के ज़िक्र और इताअत से एराज़ करना, ख़ास तौर पर नमाज़ से दूर रहना ।
2. दायमी दर्द सर जिस का कोई जिस्मानी सबब ना हो ।

3. सख्त गुस्सा के हालात कि इंसान अपने इरादा व ज़बान पर कन्ट्रोल से बाहर हो जाये।
4. ज़हनी इन्तेशार।
5. गैर फितरी तौर पर कसरत निसयान।
6. सख्त काहिली के साथ में पूरे जिस्म में थकावट महसूस करना।
7. रात में नीन्द का उचाट हो जाना और बअसानी नींद ना आना।
8. हमेशा ग़म व इज़तिराब और तंग दिली महसूस करना।
9. बिला वजह रोना या हंसना।
10. डरावने ख़्वाब देखना।
11. ज़्यादा शर्माना, और लोगों से तन्हाई पसन्द करना।
12. घर में या अहलो अयाल के साथ बैठने को ना पसन्द करना, या उन के साथ सख़्ती से पेश आना और घरेलू मशाकिल का बहुत ज़्यादा रूनुमा होना।
13. इंसान का नाकामी में पड़ना जबकि कामयाबी इस का शेवा था।
14. जिस्म के किसी हिस्सा में किसी खास मरज़ का पैदा होना जिस में मॉर्डन दवाएँ या नफसियाती इलाज कार गर ना हों, जैसे कैंसर, जिसम की अँठन वगैरा।

आप अपना इलाज ख़ूद कर सकते हैं

मेरे प्यारे भाई व बहनो! अगर अपनी ज़िन्दगी में रूक़िया के फायदे के कायल हैं तो आप को किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं कि वह आप को रूकिया करे बल्कि आप बज़ाते

खूद अपना रूक़िया कर सकते हैं।

अव्वल : अल्लाह तआला पर तवक्कुल का आला दर्जा यही है कि आप शिफा और सेहत व आफियत सिर्फ अल्लाह से तलब करें, क्योंकि यह दुआ की एक किस्म है।

दोम : इंसान का अपना रूक़िया खूद करना इख़लास का ज़्यादा बाइस है और अल्लाह की तरफ इल्तिजा व आजिज़ी इस में ज़्यादा पाई जाती है, इसी लिए इस में नफा ज़्यादा होता है और अल्लाह के हुक़म से शिफा जल्द मिलती है।

सोम : यह रात व दिन में हर वक़्त आप के पास मौजूद होता है जबकि दूसरे रूक़िया करने वालों का ख़ास वक़्त होता है और इनके पास आने जाने में दिली तंगी महसूस होती है और माल व वक़्त की बर्बादी अलग से होती है।

हाँ अलबत्ता वह शख्स जिस की कोई ख़ास हालत हो या किसी मरज़ से वह आजिज़ आ चुका हो तो उसे किसी क़ाबिले एतमाद रूक़िया करने वाले के पास जाना चाहिये ताकि बहुक़मे रब्बी मरज़ से शिफायाबी में उसकी मदद कर सके।

अरूक़िया अशशरईया (शरई झाड़ फूक)

यहाँ कुछ कुरआनी आयतें और मसनून दुआएँ बतौर इख़्तिसार ज़िक़्र की जाती हैं जो मुसिबत या मरज़ के होने पर इज़ाला और इलाज के लिए पढ़ी जाती हैं, इसके साथ मज़कूरा मुसीबत आने से पहले नफ़स की हिफ़ाज़त के लिए मुख़्तलिफ़ आमाल और अज़कार का पाबन्द भी होना चाहिये जो शख्स किसी ख़ास मरज़ के इलाज के लिए मज़ीद मालूमात चाहे तो उसे रूक़िया की मुस्तनद किताबों की तरफ रूजू करना चाहिये।

दुआए शिफा

- (1) अरुजु बिल्लाहिस समीईल अलीम मिनश-शैतानिर-रजीमि मिन हमज़िही व नफखिही व नफसिही (सही बुखारी)
أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمَزِهِ
وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ.
- (2) अरुजु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन ग़दबिही व इकाबिही व शरि इबादिही व मिन हमज़ातिश शैयातीनि व अंय यहदुरून। (सहीहुल जामे 701)
أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يُحْضِرُونِ.
- (3) अरुजु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन कुल्लि शैतानिन व हाम्मति व मिन कुल्लि ऐनिल लाम्माह। (बुखारी 3371)
أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ
كُلِّ عَيْنٍ لِأُمَّةٍ.
- (4) बिस्मिल्लाहि अरकीका मिन कुल्लि शैइनं यूज़िका मिन शरि कुल्लि नफसिन औ ऐनिन हासिदिन, अल्लाहु यशाफीका बिस्मिल्लाहि अरकीक। (मुस्लिम 2186)
بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ
أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ اللَّهُ يَشْفِيكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ.
- (5) बिस्मिल्लाहि तुर्बतु अर्दिना बिरीकति बादिना लियुशफा सकीमुना बिइज़नि रब्बना। (बुखारी 5745)

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفَى سَقَمِنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا.

(6.) सूरह इखलास, सूरह फलक, सूरह नास (मुकम्मल पढ़ें।)
(बुखारी-5749)

(7) अल्लाहुम्मा रब्बन-नासि अज़हबिल बासा वशाफि
अन्तश-शाफि, ला शिफाआ इल्ला शिफाउका शिफाअल
ला युगादिरू सकमा। (बुखारी 5733)

اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهَبِ الْبَأْسَ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي
لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا.

(8) हस्बुनल्लाहु व नेअमल वकील। (बुखारी-4563)

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

(9) असअलुल्लाहल अज़ीमा रब्बल अर्शिल अज़ीम अयँ
यशाफीक। (सहीहुल अदब 416)

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ.

(10) अल्लाहुम्मा आफिनी फी बदनि अल्लाहुम्मा आफिनी फि
समई, अल्लाहुम्मा आफिनी फि बसरी ला इलाहा इल्ला
अन्त। (अबू दाऊद 4245)

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي
بَصَرِي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ.

(11) ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़
जालिमीन। (तिर्मिज़ी 3/443)

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

(12) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिकून अल्लाहुम्मा
अजिरनी फि मुसीबति वखलफ लि खैरम मिन्हा।
(मुस्लिम 918)

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللَّهُمَّ اجْرِنِي فِي مُصِيبَتِي وَاخْلُفْ
لِي خَيْرًا مِنْهَا.

13. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है कि जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन दफा कहो: बिस्मिल्लाह और सात दफा कहो:

أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ.

अरुजुबिल्लाहि व कुदरतिही मिन शरि मा अजिदु व उहाजिरु। (मुस्लिम 2202)

रुकिया नं.1

जादू का असर ज़ाइल करने के लिए
कुरआनी आयात

(1) أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ○ بِسْمِ
اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○ اَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الرَّحْمَنِ
الرَّحِيمِ ○ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَايَّاكَ نَسْتَعِينُ
○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ○ صِرَاطَ الَّذِينَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ ○ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ○
الفاتحه، 1-

(2) اَلَمْ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ الَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَهٰمَّا رَزَقْنٰهُم

يُنْفِقُونَ ○ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ
قَبْلِكَ ○ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ○ أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ
رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ○ البقرة ٥-١٠

(٣) وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانِ عَلَى مُلْكِ سُلَيْمِنَ وَمَا كَفَرَ
سُلَيْمِنَ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ
وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا
يُعَلِّمَنِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ
بِضَارِعِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ
وَ لَيْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ○
البقرة ١٠٢

(٣) وَاللَّهُمَّ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ - إِنَّ فِي
خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَكَ فِيهَا
مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ص وَ تَضْرِيْفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ (سورة بقره ١٦٣-١٦٤)

(٥) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ○ البقرة ٢٥٥

(٦) آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ○ البقرة ٢٨٦-٢٨٧

(٤) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ○ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ○ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ○ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ○ آل عمران ١-٥

(٨) إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ

(٨) إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ
 ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا
 وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ مِ بَأْمَرِهِ ۗ لَا لَهُ الْخَلْقُ
 وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ اذْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا
 وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
 بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۗ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
 الْمُحْسِنِينَ ۝ الأعراف ٥٦-٥٣.

(٩) وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا
 يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فغلبوا
 هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَغِيرِينَ ۝ وَأَلْقَى السَّحْرَةَ لِسِحْرَيْنِ قَالُوا
 آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝ الأعراف ١١٩-١١٤.

(١٠) وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحْرَةَ
 قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۝ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ
 مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ
 عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ
 الْمُجْرِمُونَ ۝ يونس ٨٢-٤٩.

(١١) وَنُنزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ
 الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝ الإسراء ٨٢.

(١٢) قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۝ قَالَ

بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
 أَنَّهُمْ تَسْعَى ○ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى ○ قُلْنَا لَا تَخَفْ
 إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ○ وَالْقِيَامَ فِي يَمِينِكَ تَلْقَفُ مَا صَنَعُوا
 إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُ حَيْثُ أَتَى ○
 طه ٦٥-٦٩

(١٣) أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ○
 فَتَعَلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ○
 وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ
 رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُونَ ○ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ
 خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ○ المؤمنون ١١٥-١١٨

(١٣) يُسْ ○ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ○ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ○ عَلَى
 صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ○ تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ○ لِيُنذِرَ قَوْمًا
 مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُونَ ○ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى
 أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ○ إِنَّا جَعَلْنَا فِي آعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا
 فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْ م بَيْنِ
 أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا
 يُبْصِرُونَ ○ يس ٩-١٠

(١٥) وَالصُّفِّتِ صَفًّا ○ فَالزُّجْرِتِ زَجْرًا ○ فَالتَّلِيَّتِ ذِكْرًا ○ إِنَّ
 إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ○ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

الْمَشَارِقِ ○ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ○ وَ
حِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ○ لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى
وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ○ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ○
إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○
الصفات ١٠-١١.

(١٦) وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا
حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ
○ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِنْ مَّ بَعْدِ مُوسَىٰ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ
○ يَقَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ○ وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ
اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ
أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ○ الأحقاف ٢٢-٢٩.

(١٤) يَمْعَشَرِ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنْ اسْتِطَعْتُمْ أَنْ تَتَنَفَّدُوا مِنْ
أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُدُوا لَا تَتَنَفَّدُونَ إِلَّا
بِإِذْنِ رَبِّكُمْ ○ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ○ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاطِحٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرِينَ ○ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبِينَ ○ الرحمن ٣٥-٣٣.

(١٨) لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ

خَشِيَّةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لِنَاسٍ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ○ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ○ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّبُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ○ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○ الحشر ٢١-٢٣

(١٩) تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ الَّذِي
خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ○ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي
خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَفَوُّتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى مِنْ فُطُورٍ ○
ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ
حَسِيرٌ ○ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا
رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ○ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ طَوِيسًا الْمَصِيرُ . الملك ١-٦

(٢٠) قُلْ أُوْحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا
قُرْآنًا عَجَبًا ○ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا
أَحَدًا ○ وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ○ وَ
أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ○ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ

تَقُولُ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ
الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ
ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنَّ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا
نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَن يَسْمِعَ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا
رَّصَدًا ۝ الْجِن ١-٩

(٢١) إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا
فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ الْحَرِيقِ
(٢٢) قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ
يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ الْإِخْلَاص ١-٣

(٢٣) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ
إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ
إِذَا حَسَدَ ۝ الْفَلَق ١-٥

(٢٤) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ وَمِنْ
شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ
۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝ النَّاس ١-٦

रुकिया नं.2

आशिक जिन से हिफाजत के लिए कुरआनी आयात

(1) أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّبِيحِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ○ بِسْمِ
اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○ وَلَا تَقْرُبُوا الزُّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَسَاءَ سَبِيلًا ○ بنى اسرائيل ۳۲.

(2) أَلَّا خِلَافٌ يَوْمَئِذٍ لِبَعْضِهِمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ○
الزخرف ६.

(3) وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِمَّنْ
قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ○ السبا ۵۳.

(4) فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ
فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ○ المريم ۵۹.

(5) إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ○
تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَحْجَارٌ مِّنْ حَلِيبٍ مُّنْقَعِرٍ ○ القمر २०-१९.

(6) وَرَأَوْدَتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَ
قَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا
يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ○ اليوسف ۲۳.

(7) وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ○ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ○ فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ
ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ○ المعارج ३१-२९.

(٨) قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ
عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ فَاسْتَجَابَ لَهُ
رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○
اليوسف ٣٣-٣٣.

(٩) وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ
وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ○ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ
أَخَذَتُهَا الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْبِهَادُ ○
البقره ٢٠٦-٢٠٥.

(١٠) وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ
اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ
يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعَذَابِ ○ البقره ١٦٥.

(١١) الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا
تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ○
النور ٢.

(١٢) يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَسِبْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَأْيَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا
فَضْرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن

قَبْلِهِ الْعَذَابُ ○ الحديد ١٣.

(١٣) وَيَوْمَ يَعْضُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ لِيَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ

الرَّسُولِ سَبِيلًا ○ يُوَيْلَتِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ○

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ

لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ○ الفرقان ٢٤-٢٩.

(١٣) يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا

يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ

أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ

وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعُهُنَّ

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ○ الممتحنة ١٢.

(١٥) وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي

حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ○

يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ○ إِلَّا مَنْ

تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ

حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ○ الفرقان ٤٠-٦٨.

(١٦) الْيَوْمَ أُجِّلَ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

جِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ جِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا

اتَّيَمُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي

أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرُ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ
مِنَ الْخَسِرِينَ ○ المائدة ٥٥.

(١٤) وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَمِنْ فَتَيْتِكُمُ
الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ
فَانكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ
مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفَحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَ
فَإِنَّ آتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ
الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ
لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ○ النساء ٢٥.

(١٨) وَيَوْمَ يُخْشَرُهُمْ جَمِيعًا يُمْشِرُونَ الْجِنَّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ
الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيؤُهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا
بِبَعْضٍ وَوَبَلَّغْنَا آجَلَنَا الَّذِي أَجَلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ
خُلْدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ○
الانعام ١٢٨.

रुकिया नं. 3

हिफाजते हमल और बांझपन के लिए कुरआनी आयात

(١) إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي
الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَآذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي

نَفْسٍ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ○ لقمان ٣٣.

(٢) وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ ○ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ○ تكوير ٨-٩.

(٣) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ

أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ○ الفرقان ٤٢.

(٣) يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا

خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ

مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ

مَا نَشَاءُ إِلَى آجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا

أَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَى آذَانٍ

الْعُورِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ

هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ

مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ○ الحج ٥.

(٥) اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحِيلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ

وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ○ الرعدة.

(٦) يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ

وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا

اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ

رَقِيبًا ○ النساء ١.

(٤) فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَى وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

وَضَعْتُ وَلَيْسَ الذَّكْرُ كَالْأُنْثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
 أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ آل عمران ٣٦ .
 (٨) وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ
 يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
 الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا
 وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
 دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ البقرة ٢٢٨٥ .

(٩) فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ وَ بَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ
 عَلِيمٍ ۝ الذاريات ٢٨ .

(١٠) وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ
 قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ
 وَهَارُونَ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ الانعام ٨٣ .

(١١) هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً
 طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ
 يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ
 مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ قَالَ رَبِّ
 أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ
 كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ آل عمران ٣٠-٣٨ .

(١٢) قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ۗ قَالَ كَذَلِكَ

اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ○ آل عمران ٣٤.

(١٣) لِيَزَكِّيَنَّا إِيَّانَا نَبِّئْنَا بِكُفْرِيكَ بِغُلْمِ اسْمِهِ يَحْيَىٰ لَمَّا نَجَعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ○ قَالَ رَبِّ أُنِّي يَكُونُ لِي غُلْمٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ○ قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّئْ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ○ مريم ٩-٤.

(١٤) وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ○ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ○ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نَبِّئُكَ بِغُلْمٍ عَلَيْكَ ○ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيهِ تَبَشِّرُونَ ○ قَالُوا بَشِّرْنَا بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِنَ الْقَانِطِينَ ○ الحجر ٥٥-٥١.

(١٥) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَىٰ الْمَصِيرِ ○ لقمان ١٣.

(١٦) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِإِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِضْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ

المُسْلِمِينَ ○ الاحقاف ١٥ .

(١٤) وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أِفٌّ وَلَا تُنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ○ الاسراء ٢٣ .

(١٨) مِنْ أَبِي شَيْبَةَ خَلَقَهُ ○ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ○ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرَهُ ○ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ○ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ○ الاسراء ٢٢-١٨ .

(١٩) قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطْنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكَُمْ وَضَعَكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ○ الانعام ١٥ .

(٢٠) وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَمَا يُعَمِّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقِضُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ○

فاطر ١١ .

(٢١) قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ○ الانعام ١٣٠ .

(٢٢) وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ○ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ
نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ○ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا
الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا
ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ○ ثُمَّ
إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ○ المؤمنون ١٥-١٢.

(٢٣) وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ○ وَأَنَّهُ خَلَقَ الذَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى
○ مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى ○ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَى ○
النجم ٣٨-٣٣.

(٢٤) أَلَمْ يَكُنْ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَى ○ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّى ○
فَجَعَلَ مِنْهُ الذَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ○ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَى
أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى ○ القيامة ٣٠-٣٨.

(٢٥) قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ○ قَالَتْ أَنَّى
يَكُونُ لِي غُلَامٌ ○ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ○ وَلَمْ أَكْ بِبَغِيًّا ○ قَالَ
كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَى هَيْئٍ ○ وَلِنَجْعَلَ آيَةً لِلنَّاسِ ○ وَرَحْمَةً
مِنَّا ○ وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ○ مريم ٢١-١٩.

(٢٦) أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ
مُبِينٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا ○ وَنَسِيَ خَلْقَهُ ○ قَالَ مَنْ يُحْيِي
الْعِظَامَ ○ وَهِيَ رَمِيمٌ ○ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ
○ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ○ سورة يس ٤٩-٤٤.

रुकिया नं. 4

कुरआनी दुआएं

- (1) أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ○ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ○
إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ○ إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ○
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ○ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَالضَّالِّينَ ○ الفاتحة 1-4.
- (2) رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا
مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ ○ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ البقرة 124-125.
- (3) الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ○
البقرة 156.
- (4) رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ○ البقرة 201.
- (5) رَبَّنَا أفرغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ○ البقرة 250.
- (6) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا
بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ○ البقرة 286.

(٤) رَبَّنَا إِنَّا أَمْنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ آل عمران ١٦.

(٨) رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ○ سورة آل عمران ٣٨.

(٩) رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ○ سورة آل عمران ٥٣.

(١٠) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ○ سورة آل عمران ١٣٤.

(١١) حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ○ سورة آل عمران ١٤٣.

(١٢) رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ○ رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ○ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ○ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ○ سورة آل عمران ١٩١-١٩٣.

(١٣) رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ○ المائدة ٨٣.

(١٤) رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ○ الأعراف ٢٣.

(١٥) الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ○ الأعراف ٣٣.

(١٦) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ○ الأعراف ٣٤.

(١٤) رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ○ الأعراف ١٢٦

(١٨) حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ○
التوبة ١٢٩

(١٩) رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي
وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ○ الهود ٢٤

(٢٠) وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ○ الهود ٨٥

(٢١) فَاللَّهُ خَيْرٌ حَفِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ○ يوسف ٦٣

(٢٢) فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيَّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي
مُسْلِمًا وَالْحَقِّنِي بِالصَّالِحِينَ ○ يوسف ١٠١

(٢٣) رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ○
ابراهيم ٤٠

(٢٤) رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ○
ابراهيم ٤١

(٢٥) وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي
مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ○ اسراء ٨٠

(٢٦) رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ○ سورة
كهف ١٠

(٢٤) رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ○ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ○ وَاخْلُلْ عُقْدَةً مِنْ
لِسَانِي ○ يَفْقَهُوا قَوْلِي ○ طه ٢٨-٢٥

(٢٨) رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ○ طه ١١٣

(٢٩) إِنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ○ انبياء ٨٣

- (٣٠) لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ○ انبياء ٨٤.
- (٣١) رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ○ انبياء ٨٩.
- (٣٢) رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ○ انبياء ١١٢.
- (٣٣) وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ○ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ○ المؤمنون ٩٨-٩٤.
- (٣٤) رَبَّنَا أَمَّا فَأَغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ○ المؤمنون ١٠٩.
- (٣٥) وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ○ المؤمنون ١١٨.
- (٣٦) رَبَّنَا اضْرِبْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ○ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ○ الفرقان ٦٦-٦٥.
- (٣٧) رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ○ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ○ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ○ الشعراء ٨٥-٨٣.
- (٣٨) الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ عَبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ○ النمل ١٥.
- (٣٩) رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالِدَتِي وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ○ النمل ١٩.
- (٤٠) الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَّمَ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَى ○ النمل ٥٩.
- (٤١) رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ○ الصافات ١٠٠.
- (٤٢) رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالِدَتِي وَأَنْ

أَعْمَلْ صَالِحًا تَرْضَهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ○ الأحقاف ١٥.

(٣٣) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي
قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ○ الحشر ١٠.

(٣٣) رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ○ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○
الممتحنة ٥-٣.

(٣٥) رَبَّنَا آتِنَا لَنَا نُورًا وَاعْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○
التحریم ٨.

(٣٦) رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَ لِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ○ النوح ٢٨.

(٣٤) سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ○ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ○
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الصافات ١٨٢-١٨٠.

रुक्किया नं. 5

नज़रे बद से हिफ़ाज़त के लिए कुरआनी आयात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

○ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○ مُلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ○
إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ○ إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ○ صِرَاطَ الَّذِينَ
أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ○ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ○ سورة فاتحه

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ
بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ لَا يَبْصُرُونَ ○ صُمُّمَ بكم عَمِي فَهَمْ لَا يَرِجْعُونَ
○ أَوْ كَصَيْبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي
أَذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ○ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ○ يَكَادُ الْبَرْقُ
يَخْتَفِ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ ○ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○

سورة بقره ١٤٥ تا ٢٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ○ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ○ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ○ مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا أَلَمْ تَعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ○
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ○ أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ
كَمَا سَأَلَ مُوسَى مِنْ قَبْلُ ○ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ
السَّبِيلِ ○ وَدَّ كَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُّدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا
حَسَدًا ○ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ ○ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا ○ حَتَّى
يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ ○ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ سورة بقره ١٠٩ - ١٠٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ○ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ○ لَهُ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ○ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ○ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ○ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ○ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ○ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ○ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ○ سورة بقره ٢٥٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ
إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ○ سورة نساء: ٥٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَآخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَمِينَ ○ سورة

يوسف: ٦٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنْ تَرِنِ أَنَا
أَقَلُّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ○ سورة الكهف: ٣٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُونَ ○ سورة الانبياء: ١٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ○
سورة المؤمنون: ١٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَس ○ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ○ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ○ عَلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ○ تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ○ لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤَهُمْ فَهُمْ
غَافِلُونَ ○ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ○ إِنَّا جَعَلْنَا فِي
أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ○ سورة يس: ١-٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ

○ لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ
 وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ○ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا
 هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ○ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
 الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْبُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ
 عَمَّا يُشْرِكُونَ ○ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا
 فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○ سورة الحشر: ٢٣-٢٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ○
 وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا
 لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ○ سورة الملوك: ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ
 يَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ○ سورة القلم: ٥١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ○ اللَّهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ
 كُفُوًا أَحَدٌ ○ سورة اخلاص

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْقَلْبِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ○
 وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ○ سورة الفلق

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ إِلَهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ
 الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ○ مِنَ الْخَيْرِ
 وَالنَّاسِ ○ سورة ناس



ब-एहतमाम:

अरुक्किया अशशरईआ सेन्टर

मकान नं. 1337/1338, पोस्ट ऑफिस के पास,
रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)

Mob. 9785254147, 9928160191, 9982445841